आपन में बैठे आधार, खेल देखाया खोल के द्वार।
अब माया कोटान कोट करे प्रकार, तो इत साथ को न छोडूं निरधार।। १ ।।

हमारे बीच धाम धनी आकर बैठ गए हैं और परमधाम के दरवाजे खोलकर खेल दिखा रहे हैं। अब माया करोड़ों उपाय भी करे तो भी सुन्दरसाथ को यहां नहीं छोड़ेंगे।

बुलाए सैयों को चले वतन, क्यों न होए जो कहे वचन।
मन के मनोरथ पूरन कर, नेहेचे धनी ले चलसी घर।। २ ।।

सुन्दरसाथ को बुलाकर चलो घर चलें। जो वायदे किए थे वह अब पूर्ण करने हैं। मन की मनोकामना पूरी करके निश्चित ही धाम धनी घर ले चलेंगे।

अब जो आपन होइए सनमुख, तो धनी बोहोत विध पावें सुख।
कई विध दया साथ पर कर, सब विध के सुख देवें फेर।। ३ ।।

अब यदि हम माया छोड़कर धनी के चरणों में आ जाएं तो धनी बहुत खुश हो जाएंगे। उन्होंने सुन्दरसाथ पर कई प्रकार से दया की है। बार-बार सब प्रकार के सुख देते हैं।

फेर कर भलो आयो अवसर, खुले भाग धनी चित में धर।
आपन छोड़ने न करें संसार, पर धनी धाम बिछोहा न सहे लगार।। ४ ।।

दूसरी बार यह मौका हाथ आया है। हमारे नसीब खुल गए हैं। धनी को चित्त में धारण करो। हम संसार नहीं छोड़ना चाहते और धनी हमारा थोड़ा-सा भी वियोग सहन नहीं करते।

बिछोहा नहीं कछू पख तारतम, सुपन में माया देखें हम।
सुपन बिछोहा धनी ना सहे, तारतम वचन प्रगट कहे।। ५ ।।

तारतम वाणी से विचार करके देखो तो वियोग कुछ है ही नहीं (हम मूल मिलावे में बैठे हैं)। हम माया को सपने में देख रहे हैं, परन्तु हमारे धनी सपने में भी हमारा बिछुड़ना सहन नहीं करते। ऐसा तारतम वाणी में साफ जाहिर है।

ल्याए वचन तारतम सार, खोले पार के पार द्वार।
जानों जिन आसंका रहे, साथ ऊपर धनी एता ना सहे।। ६ ।।

धनी सबका सार तारतम वाणी लेकर आए हैं और उससे निराकार के पार बेहद और उसके पार अक्षर और अक्षरातीत के दरवाजे खोल दिए हैं। सुन्दरसाथ को जरा भी संशय रहे, इतना भी धनी सहन नहीं करते।

धनी के गुन मैं केते कहूं, मैं अबूझ कछू बोहोत ना लहूं।
धनी के गुन को नाहीं पार, कर ना सके कोई निरवार।। ७ ।।

धनी की मेहरबानियां मैं कहां तक कहूं? मैं नासमझ हूं ज्यादा कुछ जानती नहीं। धनी के गुण तो बेशुमार हैं जिनकी कोई गिनती नहीं कर सकता।

मैं केते नजरों देखे सही, पर गुन मुखसे न सके कही।
ना कछू किनका भोम गिनाए, सागर लेहेरें गिनी न जाए।। ८ ।।

मैंने नजरों से कई गुण देखे तो हैं पर मुख से कहे नहीं जाते। धरती के कण नहीं गिने जा सकते, सागर की लहरें नहीं गिनी जा सकतीं।

Nijanand App

मेघ की बूंदे जेती परे, ना कोई वनस्पति निरमान करे।
जदिप को निरमान होए, पर गुन धनी के ना गिने कोए।। ९ ।।

बादलों की वर्षा की बूंदें नहीं गिनी जा सकतीं। वृक्षों के पत्ते भी नहीं गिने जा सकते। यदि इनको गिन भी लिया जाए फिर भी धनी के गुणों को गिनना सम्भव है ही नहीं।

इन बेर के भी कहे न जाए, तो और बेर के क्यों कहूं जुबांए।
पेहेले फेरे की क्यों कहूं बात, गुन जो किए धनी साख्यात।। १० ।।

इस बार जो गुण किए हैं वही नहीं गिने जा सकते, तो उनके पूरे गुण जबान से कैसे कहे जाएं? पहले फेरे के बृज और रास की बात कैसे करूं? जो धनी ने हमारे ऊपर साक्षात् एहसान किए थे।

क्यों धनी गुन गिनूं इन आकार, पर कछुक तो गिनना निरधार।
इंद्रावती कहें मैं गुन गिनों, कछुक प्रकासूं आपोपनों।। ११ ।।

इस माया के तन से भी धनी के गुणों को कैसे गिनूं? पर कुछ तो गिननी हैं। [illegible]ी इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैं धनी के गुण गिनती हूं और कुछ अपनी पहचान कराती हूं कि मैंने धनी [illegible]से पहचाना।

|| प्रकरण [illegible] || २६० ||

श्री धनीजी के गुन || ११ ||

मैं लिखूं श्री धनीजी के गुन, जो रे किए मो[illegible]
जोजन पचास कोट जिमी केहेलाए, आड़ी टेढ़ी [illegible]।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैं धनीजी के गुण लिखती हूं जो उन्होंने मेरे साथ बहुत अधिक किए। पचास करोड़ योजन जमीन कहलाती है जिसमें आड़ी, टेढ़ी, ऊंची, नीची सब आ जाती है।

चौदे लोक बैकुंठ सुंन जोए, जिमी बराबर करूं सोए।
मैं प्रगट बिछाए करूं एक ठौर, टेढ़ी टाल करूं सीधी दोर।। २ ।।

चौदह लोक, बैकुण्ठ, शून्य, निराकार से लेकर सारी जमीन को एक समान करूं। फिर इसे एक साथ सीधी बिछाकर टेढ़ा-मेढ़ा, भाग सीधा कर दूंगी।

कागद धरयो मैं याको नाम, गुन लिखने मेरे धनी श्रीधाम।
चौदे भवनकी लेऊं वनराए, तिनकी कलमें मेरे हाथ गढ़ाए।। ३ ।।

इसका मैंने कागज नाम रखा। इसमें मेरे धाम के धनी के गुण लिखने हैं। अब चौदह लोकों के पेड़ पौधों को इकट्ठा करती हूं। उनकी कलमें अपने हाथ से बनाती हूं।

गढ़ते सरफा करूं अति घन, जानों बड़ी छोही उतरे जिन।
ए सरफा मैं फेर फेर करूं, अखंड धनी गुन हिरदे धरूं।। ४ ।।

कलम बनाते समय खास कजूंसी करूंगी। ऐसा न हो कि नोंक बनाते समय कहीं छिलका मोटा उतर जाए। मैं बार-बार कंजूसी करती हूं और अखण्ड धनी के गुण हृदय में रखती हूं।

Nijanand App